वेदों में विज्ञान-२

आचार्य डॉ. उमेश यादव

वर्षा का कारण

सामान्यतया यह समझा जाता है कि जल, सूर्य तथा बादल/मेघ का अटुट सम्बन्ध है । अग्निषोमात्मकं जगत्- अग्नि और सोम से जगत् बना है । सूर्य अग्नि का मूल केन्द्र है और समुद्र जल का । पहले हम जल के निर्माण को समझते हैं । अथर्ववेद ३.१३.५ "अग्निषोमौ बिभ्रति--आप इत् ता:" के अनुसार जल में अग्नि (ऑक्सीजन) तथा सोम(हाईड्रोजन) दोनों हैं । वेदों में स्थान-स्थान पर आक्सीजन के लिये अनेक शब्दों का प्रयोग किया गया है । जैसे- अग्नि, मित्र, मातरिश्वा, वैश्वानर (बड़वानल) आदि । इसी तरह सोम, जल, आप:, सलिल, वरुण आदि हाईद्रोजन का प्रतीक है । अर्थात् अग्नि में आक्सीजन अधिक और जल में हाईड्रोजन अधिक उपलब्ध है । अथर्वेद १०.८.४० अप्सु-आसीन् -"मातरिश्वा प्रविष्ठ:" और इसी तरह ऋग्वेद में कहा- वैश्वानरो यासु-अग्नि: प्रविष्ठ:-७.४९.४- इनका अर्थ है- जल में मातरिश्वा/वायु (आक्सीजन) और वैश्वानर अग्नि विद्यमान है । इस तरह जल में आक्सीजन भी है और हाईद्रोजन भी है ।

यहाँ ऋग्वेद का एक मंत्र उपस्थित करता हूँ- मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम् । धियं घृताचीं साधन्ता- इसका अर्थ - मैं (ईश्वर) जल की प्राप्ति हेतु मित्र (आक्सीजन) जो पवित्र ऊर्जा (एनर्जी) को तथा दोषों को नष्ट करने वाले वरुण (हाईड्रोजन) को ग्रहण करता हूँ । इनकी मात्रा का निर्धारण ऋषि/अन्वेशक/ वैज्ञानिक प्रयोग-विधि के आधार पर करते हैं ।

ऋग्वेद-७.३३.१० से १३ तक के मन्त्रों में विस्तार से जल बनाने की विधि बतायी गयी है । मंत्रों के आधार पर ऋषि एक कुम्भ/पुष्कर (परखनली) में मित्र का रेत वीर्य/शक्ति-कण और वरुण का रेत वीर्य/शक्ति कण अलग-अलग मात्रा में एक ही साथ डाला गया और एक प्रयोग में में पाया गया कि दोनों की एक ऐसी उचित मात्रा उपस्थित हुई जिससे अगस्त और वशिष्ठ ऋषि अर्थात् जल की उत्पत्ति हुई । अगस्त व वशिष्ठ दो विद्युत् शक्तियाँ हैं, यही कारण है कि विद्युत् के निर्माण में जल व अग्नि का प्रयोग किया जाता है । मित्र व वरुण के योग में जब विद्युत्-प्रवाह किया जाता है तब इनके अन्दर रासायनिक प्रक्रिया होती है और तब जल बनने लगता है । मंत्र में अगस्त व वशिष्ठ को कुम्भज अर्थात् घड़े से उत्पन्न और ऊर्वशी विद्युत् को कहा गया । ये दोनों शब्द ऊर्वशी/विद्युत् के मानस पुत्र माने गये । पुत्र जन्म का प्रतीक है । विद्युत् जनक और मित्र व वरुण इसकी दो साकारात्मक (+) व नाकारात्मक (-) रेतस शक्तियाँ । इस प्रकार यहाँ आलंकारिक वर्णन भी समझा जा सकता है । मंत्र में उरु अशी शब्दों का प्रयोग हुआ अर्थात् विशाल क्षेत्र में व्याप्त है । यही ऊर्वशी है; विद्युत् है ।

वैज्ञानिक प्रक्रिया में हमें यह समझना होगा कि अगस्त व वशिष्ठ अर्थात् जल विद्युत् के पेट से नहीं अपितु विद्युत् के सम्पर्क से मित्र अर्थात् आक्सीजन और वरुण अर्थात् हाईजन एक उचित मात्रा में मिले तो जल का निर्माण हो गया । जल का सूत्र समझें- H2 0 हाईद्रोजन गैस के २ अणु/ मौलेक्युल और आक्सीजन के १ अणु/मौलिक्युल एक पात्र में जब रखा जाता है और उसमें विद्युत् तरंग प्रवाहित किया जाता है तब जल अर्थात् H2 0 बनता है । गणितीय क्रम में मात्रा/पोटैंसी के हिसाब से

हाईड्रोजन की दो मात्रा औरा आक्सीजन की १६ मात्रा बन जाती है । इस १६ मात्रा को आक्सीजन के एक अणु/मौलिक्युल से ही आँका जाता है । प्रमाण के लिये यहाँ उन मंत्रों को भी उद्धुत किया जा रहा है जिनमें जल-निर्माण की विधि का वर्णन है ।

१. विद्युतो ज्योति: परिसंजिहानं मित्रावरुणा यदपश्यतां त्वा । तत् ते जन्म-उतैकं वशिष्ठ, अगस्त्यो... ॥
२. उतासि मैत्रावरुणो वशिष्ठ, ऊर्वश्यां मनसोऽधि जात: ।
३. अप्सरस: परि जज्ञे वशिष्ठ: । द्रप्सं स्कन्नं---पुस्करे त्वाददन्त ।
४. कुम्भे रेत: सिषिचतु: समानम् । ततो जातमाहुर्वशिष्ठम् । ऋग्वेद-७.३३.१०-१३

मित्र व वरुण ही वर्षा के मूल कारण हैं

प्रमाण-

क- मित्रावरुणौ त्वा वृष्ट्यावताम् । यजुर्वेद- २.१६, शतपथ ब्राह्मण-१.८.३.१२
ख- मरुतां पृषतीर्गच्छ, वशा पृश्निर्भूत्वा दिवं गच्छ,
ततो नो वृष्टिमावह। यजुर्वेद-२.१६
ग- अभ्रं वा अपां भस्म । यजुर्वेद १३.५३, शत. ७.५.२.४८

यहाँ इन मंत्रों में यही बताया कि मित्र/आक्सीजन और वरुण/हाईड्रोजन से जल जो बनता है, वह सूर्य के ताप से वाष्प बनकर समुद्र से आकाश में जाता है और जल का भश्म/ अभ्र बादल रुप बन कर फिर विद्युत् से प्रभावित होकर जल रुप हो पुन: पृथिवी पर वही वरस जाता है जिसे वर्षा

कहते हैं । यह स्पष्ट है कि मित्र व वरुण का विद्युत् से सम्पर्क न हो तो वृष्टि नहीं हो सकती न ही सूर्य के विना जल का वाष्प ही बन सकता फिर बादल भी नहीं बन सकता । विद्युत् भी एक अग्नि का हिसा है जिसका मूल स्रोत सूर्य है । वह कई रुपों में जगत् के सभी अवयवों में विद्यमान होता है । अग्नि जल , वायु, आकाश, पृथिवी आदि सब में व्याप्त है ।

वस्तुत: सूर्य में हिलियम और हाईड्रोजन पर्याप्त मात्रा में है । अपां रसं उद्वयसं सूर्ये सन्तं समाहितं । अपां रसस्य यो रसस्तं गृह्णाम्युत्तमम् ॥ यजु. ९.३ अपां रस:- जो जल का हाईड्रोजन भाग है वह पर्याप्त मात्रा में सूर्य में उपलब्ध है । जल का प्रचुर भाग से जब हिलियम गैस सम्पर्क बनाता है किसी खाश ताप पर तो बादल/मेघ रुप जल पिघलने लगता है और वर्षा की बून्दें वरसने लगतीं हैं ।

वर्षा के अनुकुल वातावरण बनाने में पृथिवी के अन्य कई तत्त्व वृक्ष-वनस्पति, वायु-प्रवाह, विद्युत् तरंग और अग्निहोत्र आदि सब अत्यन्त कारगर हैं जो वातावरण को केवल शुद्ध ही नहीं करते अपितु समयानुसार वर्षा कराने में भी पूर्ण सहायक हैं । अग्निहोत्र/यज्ञ सर्वाधिक सहयोगी कार्य है जो पर्याप्त वर्षा कराने में उपयोगी है । यही कारण है कि जब तक वैदिक काल में घर-घर सर्वत्र यज्ञ/अग्निहोत्र होते थे प्रात:-सायम् तो अति वर्षा नहीं होती थी, अति सूखा नहीं पड़ता था । सब ऋतुयें संतुलित हुआ करती थीं जो सबके सर्वांगीण विकास के कारण हुआ करता था । इसका वैज्ञानिक विस्तार आने वाले अंकों में अपेक्षित है ।